वर्ष 2003-2004 की हिन्दी रिपोर्ट

बड़े ही हर्ष की बात है कि संस्थान इस वर्ष अपनी स्थापना की 25वीं साल गिरह पूर्ण कर रजत जयन्ती मना रहा है। अतः वर्ष 2003-2004 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन संबंधी संवैधानिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए संस्थान का राजभाषा 'हिन्दी' प्रकोष्ठ ने महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसमें राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सार्थक प्रयास किए। हिन्दी कार्यो के निमित्त एक वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया गया और इस पर अमल किया गया। इस दिशा में संस्थान द्वारा 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में स्थित केन्द्र एवं राज्य सरकार के कार्यालयों के साथ अधिकांश पत्राचार हिन्दी में किया गया। संस्थान के प्रशासनिक, वित्त तथा अनुरक्षण प्रभागों ने अपना अधिकांश सरकारी कामकाज हिन्दी में ही किया।

वर्ष के दौरान दिनांक 30-5-2003 तथा 20-10-2003 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दो बैठकें आयोजित की गई। उक्त बैठकों में वर्तमान में हो रहे दैनिक कार्यो में हिन्दी के सुचारू क्रियान्वयन हेतु महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए तथा हिन्दी में चल रही गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा करने के साथ आगामी गतिविधियों के लिए कार्य योजनाओं के प्रारूप भी तैयार किए गए।

संस्थान ने कर्मचारियों को हिन्दी में प्रशिक्षित कर सरकारी कामकाज में हिन्दी अनुप्रयोग में आने वाली दिक्कतों तथा उनकी झिझक को दूर करने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान दिनांक 26-6-2003, 30-9-2003 तथा 25-11-2003 को क्रमशः 'अक्षर सॉफ्टवेयर में फोनेटिक ट्रांसलिट्रेशन सुविधा' 'हिन्दी वर्तनी और प्रयोग' और 'अभिनव हिन्दी साफ़्ट्वेयर की जानकारी' विषय पर तीन कार्यशालाएं आयोजित की गयीं। इस दौरान क्रमशः शिमला एवं डलहौजी (हि.प्र.) में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की हिन्दी कार्यशालाओं/संगोष्ठियों में दो-दो कर्मचारियों की सहभागिता सुनिश्चित की गई। इसी क्रम में संस्थान ने अपनी स्थापना की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में दिनांक 16-17 दिसम्बर, 2003 को 'जल संसाधन के क्षेत्र में भावी चुनौतियाँ' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी अयोजित की। इस संगोष्ठी की सम्पूर्ण कार्यवाही 712 पृष्ठों में एक पुस्तक के रुप में प्रकाशित की गई। इसके अतिरिक्त राजभाषा हिन्दी प्रकोष्ठ की मदद से संस्थान ने संस्थान की वर्ष 2002-2003 की वार्षिक रिपोर्ट (हिन्दी संस्करण) तथा संस्थान की वार्षिक पत्रिका 'प्रवाहिनी' के 10वें संस्करण प्रकाशित किया। संस्थान के कर्मचारियों तथा उनके परिजनों की ओर से पत्रिका में हिन्दी के मौलिक एवं सारगर्भित लेख, कविताएं आदि की चार बेहतर प्रस्तुतियों का चयन कर उनके लेखकों को सम्मानित किया गया।

संस्थान ने जन-साधारण को जल संरक्षण के विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से दिनांक 14-11-2003 को स्कूली बच्चों के लिए 'जल संरक्षण क्या करें-क्या न करें ?' विषय पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता सफलतापूर्वक आयोजित की ।

संस्थान का हिन्दी प्रकोष्ठ पूरे वर्ष भर हिन्दी के विभिन्न कार्यकलापों को आयोजित करने में सक्रिय रहा। विभिन्न तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्यो में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजभाषा 'हिन्दी' के प्रचार प्रसार तथा कार्यान्वयन हेतु विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं। रिपोर्ट वर्ष के दौरान संस्थान में दिनांक 15-9-2003 से 19-9-2003 तक हिन्दी सप्ताह का

आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन दिनांक 15-9-2003 को हिन्दी के प्राख्यात विशेषज्ञ एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष, डा0 विष्णु दत्त 'राकेश' के कर कमलों द्वारा संपन्न किया गया। इस दौरान संस्थान स्तर पर हिन्दी के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित गए, जिसमें निबन्ध, नोटिंग/ड्राफ्टिंग, लिखित प्रश्नोत्तरी, काव्य पाठ तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताएं प्रमुख रहीं। हिन्दी सप्ताह का समापन दिनांक 19-9-2003 को हुआ। इस अवसर मुख्य अतिथि डॉ. निशिकान्त महाजन, भूतपूर्व संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग ने संस्थान की गरिमा बढ़ाई तथा संस्थान की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'प्रवाहिनी' के 10वें अंक का विमोचन किया। हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

राजभाषा 'हिन्दी' के प्रयोग में अभिवृद्धि, सराहनीय कार्य एवं भारत सरकार के जल संसाधन मंत्रालय के अधीन संगठनों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए मंत्रालय ने संस्थान को लगातार दूसरे वर्ष राजभाषा का 'वैजयन्ती पुरस्कार' प्रदान किया। इसके साथ-साथ संस्थान के वर्तमान निदेशक डा. के. डी. शर्मा तथा श्री अशोक कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक 'बी' एवं हिन्दी अधिकारी (अतिरिक्त प्रभार) को राजभाषा के उन्नयन हेतु सचिव, जल संसाधन मात्रालय द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इस क्रम में प्रमुख बात यह रही कि संस्थान के इतिहास में पहली बार संस्थान के किसी अहिन्दी भाषी क्षेत्र से संबंधित अवर सचिव स्तर के वयोबृद्ध वैज्ञानिक डा. के. एस. रामशास्त्री, जो आंध्र-प्रदेश से संबंध रखते हैं, को उनके द्वारा संस्थान स्तर पर हिन्दी में किए गए महत्वपूर्ण योगदान के लिए अंगवस्त्रम् (शाल) और प्रसस्ति-पत्र प्रदान किया।

संस्थान में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2003-2004 के आयोजन के दौरान हिन्दी में स्लोगन आदि प्रदर्शित किए गए। इसके अलावा पूरे वर्ष भर संस्थान के प्रवेश द्वारा पर तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के हिन्दी शब्द पदाधिकारियों के अवलोकन हेतु लिखे गए ताकि समस्त पदाधिकारी अपने दैनिक सरकारी कार्यो में इनका प्रयोग कर सकें।